बचपन की याद सुहानी

वो बचपन की याद सुहानी,

भूले नहीं हम रात सुहानी।

छत पर तारों की छाँव में,

दादा-दादी की कहानी।

बचपन ज़िन्दगी का व पड़ाव है जिससे आने वाले भावी जीवन की आधारशिला रखी जाती है। बचपन तो जी हुई ज़िन्दगी का व सुनहरे, गुदगुदाने वाला हिस्सा है जहा मौज-मस्ती, खेल-कूद, दोस्तों की चुटकियों के साथ घर के बड़ो का दुलार भी है। ज़िन्दगी का ऐसा पक्ष जहा दायित्व, ज़िम्मेदारी का कोई बोझ नहीं होता था । होता है तो सिर्फ ठहाके, हसी, तरह-तरह के खेल, माँ की खट्टी-मीठी झार, पिता का दुलार, भाई-बहन का साथ, दादा-दादी की सीखों वाली कहानी। वो अपने ननिहाल में बिताए हुए शरारत भरे पल। मामाजी के साथ स्कूटर और साइकिल पर कच्ची सड़कों का सफर, घूमते-घूमते सड़क किनारें खड़े होकर पुचका, घुघनी खाना, एक-एक पैसे जोड़कर कहानी की किताबें खरीदना। किताबें खरीदकर सबके साथ में बैठकर पढ़ना। हर शाम भाई-बहनों के साथ अंताक्षरी, चोर-पुलिस, राजा-मंत्री और कब्बडी खेलना। खेलों के दौरान चोटों का लगना, डाँट खाना, फिर पुचकार होना।

जीवन के इस अस्मरणीय, स्वर्णिम अध्याय के बारे में जितना बोले उतना कम है, आँखों को नम कर देने वाले पल हैं। काश वह बचपन वाली मासूमियत फिर आ पाती।

मुझसे लेलो दौलत-शौहरत,

वापस लेलो मेरी जवानी।

बस लौटा दो मेरा बचपन,

कागज़ की कश्ती, बारिश का पानी।

स्वर्णिम डालमिआ

११ ए